



श्री पुण्य श्रीजो स्मारक म थगाला पुण्य न० १६

॥ अहंनमः ॥

ॐ नमो वं र मुखोदधिम् ॐ

# ज्ञान-पञ्चमी-सुव्रत-विधि

१ १/१  
१/१/१  
१/१/१

समाहिका

पूज्य वर्या-सुरतरगच्छीयार्या शिरोमणि प्रवर्तिनी-

श्री श्री १० = श्रीमती ज्ञानश्रीजी महाराज की

अ तेषामिनी

साध्वी सुजनश्री

प्रकाशिका

स्वर्गीय जाहरी श्रीयुत इन्द्रचन्द्रजी सा० भरगड की

उर्मपत्नी श्रीमती शिराम्बाई

बोर सं० २४७

११ सं०

{ विम्व स० २००५ }

## विषय-सूची

	पृष्ठ
१-स्थापना विधि	१
२-पूजा विधि	१
३-ग्यारह श्रद्ध की मन्त्रायें	११
४-ज्ञान पद चैत्यवन्दन स्तवनादि	२८
५-उत्थापनादि विधि	३६
६-सर्व तपस्या ग्रहण विधि	४०
७-सर्व तप पारण विधि	४३



## ❀ वक्रव्य ❀

चराचर समार द्वादश द्रव्यों से बना हुआ है। धमास्तिकाय अधमास्तिकाय आकाशात्मिकाय पुष्पागलात्मिकाय और काल ये पांच द्रव्य अचतन हैं। जीवास्तिकाय सचेतन द्रव्य है। अवस्था भद्र म यही जीवास्तिकाय द्रव्य मंत्र भूत-जीव ब्रह्म-आत्मा एवं परमात्मा आदि नामों से जाना जाता है। अपना ही अशुद्ध प्रक्रियालय आत्मकों की मत्तान परपरा म यथा हुआ आत्मा समार म भक्तता हुआ समारों बहा जाता है और मदगुरूका प्रेरणा म या स्वभाव म अनुकूल कालादि निमित्ता का पाकर अपनी शुद्ध प्रक्रिया से कर्मों को काफिर बंधन मुक्त होता हुआ वही आत्मा परमात्मा बन जाता है। इस प्रकार समार आत्मा भी अनंत है और समार मुक्त परमात्मा भी अनंत है।

आत्मा का प्रधान गुण लक्षण उपयोग है। सामान्य उपयोग ज्ञान और विशय उपयोग जान कहा जाता है। इस दृष्टि म जान आत्मा का प्रधान गुण है। निगाद की निकृष्टतम अवस्था म भी अक्षर का अनंतवा भाग ज्ञान रूप में मांशु हाता है। वही जान अनुकूल कालादि कारणों को पाकर परमात्मा की उत्कृष्टतम अवस्था म पूर्ण वैवल जान रूप से विकसित हा जाता है।

जान गुण को दकनेवाले कम का जानावरणीय कहत है। जानावरणीय कम का लघोपशम से मतिजान श्रुतजान अग्रधिजान और मन पयाय जान रूप म विकसित हाता है एवं लघिक भाव म कवन जान का प्रकाश पैदा होता है। कम का आवरण पुरुषाय से हटना है। अनुकूल द्रव्य सत्र कान और भाव म किया हुआ पुरवार मफत्र हाता है। इसलिय उन धारों का ध्यान रखना चाहिये। एम काय माधक पवित्र वात का एव कहत हैं। पर्य में का हुइ थोदा भी त्रिया समय पर की हुइ खेती के ममान महान् फल को म्नी है।

वरदत्त गुण मजरा क तैस जान की एवं जानीकी आसातना करन म दिमाग विस्मरणशील रागी रहता है। आराधना से प्रशस्त एवं प्रमत्त रहता है प्रत्येक शुद्ध पत्र की पचमी जानाराधन की प्रधान तिये

मानी जाती है। कार्तिक शुक्ल पक्षमी का विष्णु माहात्म्य है। उस राज जीवन की जम्भता का काम करने के लिए उपवास-व्रत करना चाहिये। अधिक गुखी गुरुर्था के साथ मन्त्र घटा करनी चाहिये। गुरुर्था द्वारा लिपिबद्ध साहित्य का पढ़ने की अभिरुचि रखने हुए उच्च भाव से पूजा करना चाहिये। पूजा का सर्वविधि पूजा योग्य पुजारी का भी पूजा बना देना है।

जान पक्षमी सुव्रत विधि का समग्र पूजा गुरुर्था भीमती प्रवर्तिनी श्री महाराज साहिब का सन्नुग्रह से संपन्न हुआ है। श्री पुण्यार्थी श्री मारक ग्रन्थमाला के सोलहवें पुण्य रूप से इसका प्रकाशन नयपुर के सुप्रसिद्ध जौहरी स्वर्गीय भीमान् इन्द्रचन्द्रना गान्ध करगढ़ की धर्मपत्नी एवं श्री सुव्रतचन्द्रजी की माताजी शिवरबाई ने किया है जो धन्यवाद के पात्र है। जानारावक समय काम उठावे।

निवेदिका

मजनथी



॥ ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥

ज्ञानदायि-सद्गुण्यो नमो नमः.

# ज्ञान-पञ्चमी-व्रत-विधि

( मंगल )

अनन्त घर्मात्मक-वस्तु-तत्त्व,  
प्रकाशयद् भानुरिवेह यत्सत् ।  
मिनत्ति दुर्बोध-तम समस्त,  
नमापि तज्ज्ञानमह श्रियेस्तात् ॥

( उप-द्रवजा )

## स्थापना-विधि

कातिक शुक्ला ५ के दिन शुभ घड़ी में 'ज्ञान मंदिर' उपाध्य घर्माशाळा अथवा पवित्र मनोहर एकांत निरुत्तिपय स्थान को धूपादि से सुवासित कर, चन्द्रवा पूठिया आदि से अलङ्कृत कर, पट्टों पर पुस्तकें पृष्ठे प्रमुख स्थापन करे । शुद्ध ताजा घृत का अखंड दीपक रखें धूप अगरबत्ती कपूर आदि खेवे ।

## पूजा विधि

अथर्वण्ड उज्ज्वल चावलों के पांच स्वस्तिक करे । ताजे फल पुष्प नैवेद्य घड़ावे । पांच बत्ती का दीपक करे ।

## ज्ञान पूजा गाथाएँ

नमति सामन्त षड्विंशति देवाय पूये सुविवेय पुब्वि ।  
 मनीय चित्तं मण्डिदामण्डि मदार पुष्क पसवेहि नाग ॥१॥  
 तद्देव सङ्घा मणि मुक्तिण्डि-सुगध पुष्केहि वरसिण्डि ।  
 पूयति वदति नमति नाण, नाणस्म लाभाय भवकवयाय ॥२॥

ये गाथाएँ बोलकर वासक्षेप से ज्ञान पूजा करे ।  
 यथाशक्ति रोकड़ी चढ़ावे । पुस्तक पृष्ठा कागज कलम  
 होरडर पाठी पेन्सिल आदि चढ़ावे । स्वमासमण्य देकर  
 हरियावही पडिकक्रमे । एक लागसस का कापोत्सग करके  
 प्रकट लागसस कहे । मुहपत्ति पडिलइण कर वा वाँदण  
 देवे । फिर पांच स्वमासमण्य देकर चैत्यवन्दन करे —

### ॐ चैत्यवन्दन ॐ

सकलवस्तु प्रतिमाम भानु, निर्मलसुखकारण ।  
 सम्यगदर्शन पुष्पहेतु, मज्जल निधि तारण ॥  
 मयस तप आनन्द कन्द अन्नाण्य निवारण ।  
 मार-विकार-प्रचार-ताप-तापित-जन तारण ॥ १ ॥  
 स्याद्वाद परिणाम धर्मपरिणति पडिमोहण ।  
 साहु साहुणा सघ सर्व आराधन सोहण ॥  
 मोदतिमिर विध्वंस सुर मिथ्यात्व पण्यारण ।  
 आतम शक्ति अनन्त शुद्ध प्रभुता परगासण ॥ २ ॥

मति श्रुत अग्रधि विशुद्ध नाण मण पञ्जव कवल ।  
 भेद पचास चायापशमिक एक चायक निमल ॥  
 दोष परोक्ष प्रथम तिहाँ, दुग परतक्ष दीसत ।  
 सकल प्रत्यक्ष प्रकाश माम, ध्रुव केवल अपरिमित ॥ ३ ॥

धर्म सकल ना मूल शुद्ध-त्रिपदी जिन भाषे ।  
 बाहिर अङ्ग प्रधान खन्ध गणघर सुप्रकाशे ॥  
 शाखा धी निर्युक्ति भाष्य पडिसाखा दीपे ।  
 चूर्णि टीका पत्र पुष्प सशय सब जापे ॥ ४ ॥

पञ्चाङ्गी सार बोध कद्यो जिन पञ्चम अङ्गे ।  
 नन्दी अनुयोग द्वार साख मानो मनरङ्गे ॥  
 वीर परम्पर जीत पह, अनुभव उपगारी ।  
 अभ्यासो आगम अगम, निरूपष सुखकारी ॥ ५ ॥

मोहपक हर नीर सप्त, सिद्धांत अवाहे ।  
 देवचन्द्र आणा सहित नय-भङ्ग वगाहे ॥  
 ए श्रुत ज्ञान सोहामणो, सकल मोक्ष सुखकन्द ।  
 मगते सवो भविक जन, पामो परमानन्द ॥ ६ ॥

फिर नमस्तुभ्यं० जायति चेद्दया० जायति केवि  
 साह० नमोर्हत्सिद्धा० कह कर स्तवन कहे —



## —: स्तवन :—

## ढाल पहली

प्रणमू श्री गुरुपाय, निर्मल ज्ञान उपाय,  
 पञ्चमी तप मणू ण, जन्म मफल गिगू ण ॥ १ ॥  
 चउवीसमो जिनचन्द, कवल ज्ञान दिनन्द,  
 त्रिगडे गह गहोए, भविष्य ने कथाए ॥ २ ॥  
 ज्ञान बढो ससार, ज्ञान सुगति दातार,  
 ज्ञान दोबो कदो ए, साँचो सद्दो, ण ॥ ३ ॥  
 ज्ञान सोचन सुविलास, लोका लोक प्रकाश,  
 ज्ञान बिना पशु ए, नर जाणे किर्यु ए ॥ ४ ॥  
 अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण,  
 जानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ण ॥ ५ ॥  
 ज्ञानी श्वासोसास, कर्म करे ज नास,  
 नारकी ना सही ए, ऋड वरस कही ए ॥ ६ ॥  
 ज्ञान तणो अधिकार, वाढ्या सूत्र मकार,  
 किरिया छे सही ए, पिण पाळे कही ए ॥ ७ ॥  
 किरियासहित जो ज्ञान, हुवे तो अति परधान,  
 सोनो ने सुरो ए, शङ्ख दूधे भयो ए ॥ ८ ॥  
 महा-निशीथ मकार, पचमी अक्षरसार,  
 भगवत माप्पियो ए, गणधर साप्पियो ए ॥ ९ ॥

## ढाल दूमरी

पञ्चमी तप विधि सौमनी, जिम पामा भवपारा रे ।  
 श्री अरिहत इम उपदिशे, भविष्य ने हितकारो रे । ५०॥  
 मिगमर माह फागुण मन्ना, जेठ आपाढ़ बंशाग्यो रे ।  
 इण पटमामे लीजिये, शुभ दिन सद्गुरु साग्या रे ॥५०॥  
 देव जुहारी देहरे गीतारथ गुरु वन्दी रे ।  
 पोथी पूजो ज्ञाननी, सगति हुव ता नन्दी रे । ५०॥  
 बेकर जोड़ी भाव सुँ, गुरु मुख करो उपवासो रे ।  
 पचमी पढ़िकमणो करा, पढ़ा पण्डित गुरु पालो रे ॥५०॥  
 जिण दिन पचमी तप करो, तिण दिन आरम टालो रे ।  
 पचमी स्तन थुई कहो, ब्रह्मचारिज पिण पालो रे ॥५०॥  
 पाच माम छपु पञ्चमी, जाव जीव ठल्कृष्टी रे ।  
 पाँच बरस पाँच मासनी, पञ्चमी करो शुभ दृष्टा रे ॥५०॥

## ढाल तासरी

दिव भविष्य रे पञ्चमी ऊजमणो सुणो,  
 घर सारू रे वारू धन म्वरचो घणो ।  
 ए श्वसर रे आरता बलि दोहिलो,  
 पुण्य जोगे रे धन पामता सोहिला ॥

## उल्लालो

सोहिलो बलिय धन पामता पिण धर्म काज निई वली,  
 पचमी दिन गुरु पास आनी कीजिए काउसग रली ।

त्रय ज्ञान दर्शन चरण टीकी देई पुस्तक पूजिये,  
स्थापना पहिची पूज वसर सुगुरु मेवा काजिये ॥ १ ॥

सिद्धान्तनी र पाँच प्रति वीटांगणा,

पाच पूठा र मखमल सूत प्रमुख तणा ।

पाँच टारा रे लखण पाँच मजीसणा,

वाम कूपा र काशी वारू वतरणा ॥

### उल्लाळी

वतरणा वाळ वलिय कॅवली पांच भिलमिल अति मली,  
स्थापनाचाग्नि पांच ठवणा मुँडपता पड पाटली ॥

पट सूत्र पाठी पच कोथलि पच नवकरवालिपाँ,  
इण पर भावरू करे पचमी उजमणु उजवालिथां ॥२॥

बलि देहरे रे स्नान महात्सव कीजिये,

घर सारू रे दान वली तिहां दीजिये ।

प्रतिमा न रे आगल ढावणु ढोश्ये,

पूजानां रे जे जे उपगण जाइये ॥

### उल्लाळी

वाइय उपगण दवपूजा काज वलश भुङ्गार ए,  
आरती मङ्गल थाल दाना धूप धारण सार ए ।

घन मार कशर अगार सुखड अङ्गलुइणु दीम ए,  
पंच पच मवली वस्तु ढावी सगति सु पचवीस ए ॥३॥

पचमीता रे माहमा सर्व जिमाङ्गिये,  
 रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाङ्गिये ।  
 इण करणी रे करतो ज्ञान आराधिये,  
 ज्ञान दरिसरा रे उत्तम मारग साधिये ॥

### उल्लाखो

साधिये मारग एह करणी ज्ञान लहिये निरमलो,  
 सुरलोक ने नर लोक माँहा ज्ञानवन्त ते आगल्लो ।  
 अनुक्रमे कवल ज्ञानपायी साश्वता मुख जे बडे,  
 जे करे पचमी तप अग्य एडठ वीर जिनवर इम कडे ॥४॥

### कलेश

इम पचमी तप फल प्ररूपक वद्दमान जिनेसरो,  
 में शुणपो श्री अरिहत भगवत अतुल बल अलवेसरो ।  
 जपधत श्री जिनचन्द्र सुरि ज सकल चन्द नमसियो,  
 वाचनाचारिज समयसुन्दर भगति माव प्रशसिया ॥५॥

षाद जयशीपराय० अरिहत चेरपारा० अनत्य०  
 एरु नयकार का कायोत्सर्ग करे नपोर्दत्त० कडे कर स्तुति  
 कडे—

देविंद रदिय पयेदि परूबियाणि,  
 नाणाणि केवल मणादि मड सुपाणि ।  
 पचारि पथम गई सिय पंचमीण,  
 गुण रयाण जिपाण दिंतु ॥६॥

किर ज्ञान आराधना निमित्त करैमि काउमगा  
कहर तस्सुत्तरी० अन्तथ कहे एक लागस्त का कायोत्सग  
करक स्तुति कहे—

बोधागाध सुपद-पदवी नीर पूराभिराम

जोवाहिसा विरल लहरी सगमागाह-देहम् ।

चूलायेल गुरु-गम-मणी-सङ्कल दूर-पार,

सार बीरागम जलनिधि सादर साधु सेवे ॥१॥

पाछे निम्न गाथा कहे—

आमिखिवाहिय नाण, सुयनाय चैव श्रोहीनाय च ।

तह मणपञ्जवनाय, देवल नाय च पञ्चमय ॥१॥

तत्पश्चात् इन्द्रायि खमासमणा० कह कर निम्नलिखित  
पांच तथा स्थिरता होतो इक्यावन नमस्कार कर—

पाँच नमस्कार —

१ श्री मतिज्ञानाय नम । २ श्री श्रुतज्ञानाय नम ।

३ श्री अवधिज्ञानाय नमः । ४ श्री मन पर्यवज्ञानाय नम

५ श्री केवलज्ञानाय नमः ।

इक्यावन नमस्कार .—

१ स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ।

२ रसनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह " नमः ।

३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह " नमः ।

४ धोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह " नमः ।

५	स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह	मतिज्ञानाय नम ।
६	स्मनेन्द्रिय अर्थावग्रह	” नम ।
७	घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह	” नम ।
८	चक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्रह	” नम ।
९	श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह	” नम ।
१०	मनोऽर्थावग्रह	” नम ।
११	स्पर्शनेन्द्रिय ईहा	” नम ।
१२	स्मनेन्द्रिय ईहा	” नम ।
१३	घ्राणेन्द्रिय ईहा	” नम ।
१४	चक्षुरिन्द्रिय ईहा	” नम ।
१५	श्रोत्रेन्द्रिय ईहा	” नम ।
१६	मन ईहा	” नम ।
१७	स्पर्शनेन्द्रिय अपाय	” नम ।
१८	स्मनेन्द्रिय अपाय	” नम ।
१९	घ्राणेन्द्रिय अपाय	” नम ।
२०	चक्षुरिन्द्रिय अपाय	” नम ।
२१	श्रोत्रेन्द्रिय अपाय	” नम ।
२२	मनोऽपय	” नम ।
२३	स्पर्शनेन्द्रिय धारणा	” नम ।
२४	स्मनेन्द्रिय धारणा	” नम ।
२५	घ्राणेन्द्रिय धारणा	” नम ।
२६	चक्षुरिन्द्रिय धारणा	” नम ।
२७	श्रोत्रेन्द्रिय धारणा	” नम ।

२८ मनो धारणा मतिज्ञानाय नम ।

२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नम ।

३० अक्षर " नम ।

३१ मति " नम ।

३२ अमति " नम ।

३३ सम्यक् " नम ।

३४ मिथ्या " नम ।

३५ मादि " नम ।

३६ अनादि " नम ।

३७ अपर्यवमित " नम ।

३८ अपर्यवमित " नम ।

३९ गमिक " नम ।

४० अगमिक " नम ।

४१ अङ्गप्रविष्ट " नम ।

४२ अङ्गप्रविष्ट " नम ।

४३ अनुगामि अविज्ञानाय नम ।

४४ अननुगामि " नम ।

४५ रद्दमान " नम ।

४६ हीयमान " नम ।

४७ प्रतिपाति " नम ।

४८ अप्रतिपाति " नम ।

४९ अजुमनि मन पर्यवज्ञानाय नम ।

• निपुलमति " नम ।

५१ लोकालोक प्रकाशक श्री कमलज्ञानाय नमः ।

पश्चात् स्थिता हां तो ५१ लोगम्म का कायोत्मग  
कर । नहीं तो ५ लोगम्म का कायोत्मग करे । पार कर  
प्रकट लागम रहे । “ॐ ह्रीं नमोनागम्म” इम पर की  
०० माला गुणे । धैर्य होतों ग्यारह अङ्ग की सज्जाय परे ।

## ग्यारह अङ्ग की सज्जायें

### प्रथम आचाराङ्ग सज्जाय

( राग—हठीजा की )

पहिलो अङ्ग सुहामणो रे लाल,  
अनुपम आचाराग रे । सुगुणर ॥  
वीर जिनंठ बस्ताणियो रे लाल,  
उपगई जाम उपाग रे ॥ सु० ॥ १ ॥  
बलिहारी एह अङ्गनी रे लाल,  
हूँ जाऊ वारवार रे ॥ सु० ॥  
पिनय गोचरी आदर लाल,  
जिहाँ माधु तथा आचार रे ॥ सु० ॥ ५० ॥ २ ॥  
सुयगन्ध दोयछे जेहना रे,  
प्रवर अध्ययन पत्रमी रे ॥ सु० ॥  
उद्देशादिक जाणिये रे लाल,  
पञ्चाशी मुजगीश रे ॥ सु० ॥ ५० ॥ २ ॥  
हुतु—जुगति कर शोभता रे,

हजार रे ॥ सु० ॥



अक्षर पठ ने ड्रुड र लाल,  
 मग्याता श्रीरार रे ॥ सु० ॥ च० ॥ ४ ॥  
 गमा अनन्ता जहमा रे,  
 गलि अनन्त पर्याय रे ॥ सु० ॥  
 प्रम परिष्ठ तो छे इहाँ र लाल  
 थार अनन्त कहाय र ॥ सु० ॥ च० ॥ ५ ॥  
 निरद्ध निराचित साग्यता र,  
 चिन प्रणीत ए भाव र ॥ सु० ॥  
 सुगता श्रातम उल्लमे रे लाल,  
 प्रगटे सहज स्वभाव रे ॥ सु० ॥ च० ॥ ६ ॥  
 सुगुण श्रायक चार श्रायिका रे,  
 अगे धरिय उल्लाम रे ॥ सु० ॥  
 विधि पूर्वक तुम मामलो रे लाल,  
 गीतारथ गुरु पाम र ॥ सु० ॥ च० ॥ ७ ॥  
 ए सिद्धान्त महिमा निलो रे,  
 ऊतारे भय पार रे ॥ सु० ॥  
 विनयचन्द्र कहे माहर रे लाल,  
 ए हिन अङ्ग आधार रे ॥ सु० ॥ च० ॥ ८ ॥

### द्वितीय सूत्रकृताङ्ग मज्जाय

( राग—रसिया को )

बीजो रे अङ्ग तुमे साभला,  
 मनोहर श्री सुयगढाग ॥ मोरा माजन ॥

प्रणमे प्रमट पापएटी तणी,  
 मन रणट्या धर रग ॥ मोरा० ॥ १ ॥  
 मीटी र लाग राणी जिन तणी,  
 चागे जेहधी रे ज्ञान ॥ मोरा० ॥  
 ए राणी मन भणी माहर,  
 मानु सुत्रा ने ममान ॥ मोरा० ॥ मी० ॥ २ ॥  
 गयपमेणी उत्राग ठे जेहनो,  
 ए ता सुत्र गर्भार ॥ मोरा ॥  
 चन्द्रशुन अर्थ जाणे महु,  
 चीर नीर अनु तीर ॥ मोरा० ॥ मी ॥ ३ ॥  
 एहना रे सुयखन्त्र दोय छ,  
 बलि अध्येयन तेरीम ॥ मोरा० ॥  
 उद्देशा ममुद्देशा निहा भला,  
 मन्व्याये र तेरीम ॥ मोरा० ॥ मी० ॥ ४ ॥  
 नय निक्षेप प्रमाण भया,  
 पद छत्तीम हनार ॥ मोरा० ॥  
 रमयाता अचर पद माँहे,  
 कुण लहे तहनो र पार ॥ मोरा ॥ मी ॥ ५ ॥  
 गमा अनन्ता पर्याय बलि,  
 भेत् अनन्त जिण माहि ॥ मोरा० ॥  
 गुण अनन्त प्रम परित्त कदा,  
 थावर अनन्त जेह माहि ॥ मोरा ॥ मी ॥ ६ ॥

निरद्व निरुचित न मामयकृदा,  
 चिन पनता र माय ॥ मोरा० ॥  
 भापी र सुन्दर गृह परपणा,  
 चरण ररग नो र जाय ॥ मोरा ॥ मी ॥७॥  
 ररिये भगति जुगति ए सुत्र नी,  
 निश्चय लहिये र मुक्ति ॥ मोरा० ॥  
 विनयचन्द्र कहे प्रगटे एव यी,  
 आत्म गुणनी रे शक्ति ॥ मोरा ॥ मी ॥८॥

### तृतीय स्थानाङ्ग मञ्जाय

(राग- आठ टक वक्ष्य लियारी०)

श्रीना अग भला कथो रे, चिननी, नामे श्री टाणाग  
 मोरो मन भगन थयो, हाग देखी देखी भाय । हारे नीय  
 तीव स्वभाव मारो मन भगन थयो ॥ १ ॥ टक ॥

मवल जुगति करि आचतो रे जिननी,  
 जीयाभिगम उपाय ॥ मो० ॥  
 एव अग मुक्त मन वम्या रे जिननी, ।  
 चिम मोरिल टल अय ॥ मा० ॥  
 गुहिर भाय ररि गावतो र चिननी  
 आज तो गृह आलय ॥ मो० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥  
 कूट शैल गिरगी निरुद्धे  
 कानन ने बलि कुरहे

गह्वर श्रावण द्रव नदी रे जिनजी,  
 नेह में अछे र उदण्ड ॥ मो ॥ ३ ॥  
 दण ठाणा अति दीपता रे जिनजी,  
 गुण पर्याय प्रयोग ॥ मो ॥  
 परित्त जेह नी राचना रे जिनजी,  
 सरयाता अनुयोग ॥ मो ॥ ४ ॥  
 रष्टित श्लोक निजुत्तिसु रे जिनजी,  
 साग्रहणी पडिचित्त ॥ मो० ॥  
 ए महु सरयाता चिहँ रे जिनजी,  
 सुणता उद्वमे चित्त ॥ मो ॥ ५ ॥  
 गुणसन्ध इरु गजतो रे जिनजी,  
 दण अध्ययन उदार ॥ मो० ॥  
 रद शैलिक वीण छे रे जिनजी,  
 पठ बहोत्तर हजार ॥ मो ॥ ६ ॥  
 रागी जिन शामन तणा रे जिनजी,  
 सुणे सिद्धान्त बसाण ॥ मो ॥  
 विनयचन्द्र रहे ते दूरे रे जिनजी,  
 परमारथ ना जाण ॥ मो ॥ ७ ॥

—चतुर्थ समवायाङ्ग सज्जाय—

( राग—धाग महलाँ उपर मेह० )

चौथो समवायाङ्ग, सुणो श्रोता गुणी हो लाल सुणो ॥

पन्नगणा उपाङ्ग, करी शोभा वणी हो लाल करी ॥

अर्घ्य मागधी भा  
 शारदा सुरतगुणी हः ताल रागा० ।  
 ममकित भाव कुमु -  
 परिमल व्यापी प्रभा न लाल परि० ॥ १ ॥  
 नीत्र अनीत्र ने जीत्र -  
 जीत्र ममाम वी हो लात्र नीत्र० ।  
 लहिण ण्ठ थी भात्र,  
 विरोध कौंड नथी हा लाल त्रिा ॥  
 भाँगा तीन स्वममया—  
 त्रि ना जाणिये हो लाल त्रि० ।  
 लोत्र थलोरु ने लोत्र—  
 लोरु त्रयाणिये हो लाल अला० ॥ २ ॥  
 एक थरी छे शत  
 ममनाय प्रस्पणा हो लाल सम० ।  
 काडा कोडी प्रमाण व  
 जीत्र निरूपणा हो  
 चारह विह  
 तणी  
 नास्वत  
 छे एहना स  
 गुयगन्ध य  
 उदे शादिक

सरयागें एक एक,  
प्रत्येक गुण निला हो लाल प्रथ ॥

पद एक लाग्य चमाल—  
महम तें उचराहो लाल मह ॥  
ए ने अग्र उदग्र,  
सरय्याता अचरा हो लाल मर्या ॥ १ ॥

भाव्य चृणिं नियुक्ति,  
करी सोहे सदा हो लाल करी ॥  
सुणता भेद गम्भीर,  
तृप्ति न होणे रुद्रा हो लाल तृप्ति ॥

जेह न माने अग वे,  
अन्तर गति हमी हो लाल अन्तर ॥  
जल रमन्ते जोर,  
वृष्ण न होणे रुशी हो लाल ॥ ५ ॥

जाग्यो धम स्नेह,  
जिण्णु सु माहरो हो लाल जिण्णु ॥  
तजिया शास्त्र मिथ्यात्व  
मूत्र जाण्यो खरो हो लाल मूत्र ॥

निम मालती लहि भृङ्ग,  
करीर नपि रहे हो लाल करीरे ॥  
इंग्र गिर मगगङ्ग,  
नपि रहे हो लाल तपि ॥ ६ ॥

॥ प्रवचन नियन्त्र

तणो जुगते वडो हो लाल तणो ।

माकर मेलडी द्राघ,

थरी पिण मीठटा हो लाल थरी० ॥

शु रुहिय वट्टु चात,

पिनयचन्द्र डम रुहे हो लाल रि० ॥

एहना सुणने भार,

शेता अति गढ गढ हो लाल शेता० ॥७॥

❀ पञ्चम भगवती सूत्र मज्झाय ❀

( राग पधोदा नो )

पचम अग भगवती जाणिये र,

तिहाँ चिनार ना वचन अथाह रे ।

हिमयन्त परेत मेती नीकल्यो र,

मानू परतिर गङ्ग प्रगाह रे ॥ ५० ॥ १ ।

सुर पन्नति नामे परगढो र,

जेहनो छे उदाम उपग र ।

सूत्र तणी रचना दगिया चिमी रे,

माहेला अर्थ ते मजल तरग रे ॥ ५० ॥ २

इहा ती सुययन्ध एक अति भलो र

एर सो एर अध्येयन उदार र ।

दश हजार उद्देशा जेहना रे,

तिहाँ कीना प्रश्न छर्नासि हनार ॥ ५० ॥

पद तो दोय लाम्ब अरथे भर्या रे,  
 ऊपर महम्म अठ्यामी जाण रे ।  
 लोकालोक म्यरूप नी रणना रे,  
 विवाह पन्ननि अधिक प्रमाण रे ॥ ५० ॥ ४ ॥  
 करिये पूजा अने परमाणना रे,  
 धरिये सद्गुरु ऊपर गग रे ।  
 मुखिये धूत्र भगरती राग धू रे,  
 तो होय भत्र सागर नो त्याग रे ॥५॥५॥  
 गौतम नाम उच्य चण्डये रे,  
 मभ्यग् ज्ञान उदय होय जेम रे ।  
 कीर्ति साधु तथा साहमी तर्णी रे,  
 भगति जुगति मन आणी प्रम रे ॥५०॥६॥  
 इण विधि धू ए धूत्र आराधता रे,  
 इण भत्र मीभे वदित काज रे ।  
 पर भरे त्रिनयचन्द्र कहे ते लडे रे,  
 मोहन मुगति पुरी ना रात्र रे ॥५॥७॥

ॐ पठ ज्ञाता सूत्र मञ्जाय ॐ

( राग—रिक्त लस लामा० )

उठ्ठो अग ते ज्ञाता धूत्र वग्गणियेजी, जेहना छे अरथ  
 अधिक उद ड हो म्हाग मुणजा धरि नेह सिद्धान्त नी  
 वातही जी ।



श्रवणे मुण्डाँ गाढो गम उपन जी,  
 मधुरता तर्जित निम मधुगड हो म्हा० ॥१॥  
 जम्बूद्वीप पन्नक्ति उपाङ्ग छ जहनो र,  
 इण भाहे जिन पूजा नी त्रिधि जोर हो ।  
 श्रवण सुणि परम शान्त रस अनुभवे जी,  
 चर्चन करे मम सोर हो ॥ म्हा० ॥२॥  
 नगर उद्यान चेत्य वनगवण्ड साहामणा जी,  
 समनमरण राजा ना मात ने तात हो ।  
 धर्माचारज धर्मरथा तिहो दाखनीजी,  
 इह लोरु परलोरु श्रद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ॥३॥  
 भोग परित्याग श्रज्या पर्यदाजी  
 सत्र परिग्रह वारु तप उपधान हो ।  
 गलेहण पञ्चकपाण पादोपगमनता जी,  
 स्वर्ग गमन शुभ कुल उत्पत्ता न हो ॥ म्हा० ॥४॥  
 नोधिलाम वलि तत न अन्त कृत्य कही जी,  
 धर्म कथा ना दोय सुयखन्ध हो ।  
 पहिला ना उगणीस अध्ययन ते आज छे जी,  
 बीजा ना दम वर्ग महा अधुनन्ध हो ॥ म्हा ॥५॥  
 ऊँठ कोडि तिहा मवल कथानरु भापियाजी,  
 भाप्या वलि, उगणीस उद्द श हा ।  
 सख्याता इजार भला पद पटना जी,  
 पह धनी जाये कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ॥७॥

विनय करे जे गुरु नो उहु परेनी,

तेहने नुत सुखता बरु फल होय हो ।

ने रमिया मन बमिया विनयचन्द्र ने जी,

सो माहे मिले जोया एरु न टाय हो ॥महा०॥७॥

❀ उपामरु-दशा सूत्र सञ्जाय ❀

( राग—त्रिडिया ना )

व मानमो अग ते मोंमलों, उपासक दगा नामे चग रे ।

मणोपामवनी बर्णना, जसु चन्द्र पन्नति उपाग रे ॥१॥

न लागो मोरो सूत्र थी, एतो भय पैराग तरग रे ।

रस राता जाना गुण लहे,

परमारथ मुविहित सग रे ॥मन०॥२॥

ए अगे सुयसन्ध एक छे, अध्ययन उन्शे विचार रे ।

दम दम सरयायें दासव्या,

पण पण सरयात हजार रे ॥ मन०॥३॥

गानन्दादिक श्रावक तणो, सुगुता अधिकार रमाल रे ।

रस लागे जागे मोहनी,

श्रोता जन ने ततकाल रे ॥ मन०॥४॥

गोता आगल तो बाँचतों, गीतारथ पामे रीक रे ।

ज अर्द्धदग्ध ममके नहीं,

तेह सू तो करी धीज रे ॥ मन०॥५॥

रस श्रावक ता उहा भापिया, पिण सूत्र भएया नहीं कोय रे ।

ते माते शुद्ध प्रारज भणी,

एव अस्थ नी धारणा हाय रे ॥ मन० ॥६॥

साचो होय ते प्ररुषिये, नि शक पणे गुजगीम रे ।

कनि पिनयचन्द्र रहे शु थयो,

जो कुमति करमे रीम रे ॥ मन० ॥७॥

### ❀ अन्तकृद् दशा-मंत्र-संज्ञाय ❀

( राग—उर म्प्राणा रागा चैवणा जा )

आठमो अग अन्तगड दशा जी,

सुणि करो मान पवित्र ।

अतगड केवली जे थया जी,

तहना रे आठ चरित्र ॥ आ० ॥१॥

कम कठिन दल चरता जी,

पूरता जगत नी आश

जिनर देव इहा भापता जी,

सामता अर्थ शुनिलाम ॥ आ० ॥ २ ॥

मकल निक्षेप नय भग थी जी,

अगना भाव अभाग ।

सहज सुमरग नी तन्पिमा जी,

रुन्पिका जाम उभाग ॥ आ० ॥ ३ ॥

एव सुयखन्ध दण अगना जी,

वर्ग ठे आठ अभिराम ।

आठ उद्गा छे उली जी,  
 मख्याता महस पद ठाम ॥ आ० ॥ ४ ॥  
 आठमा अगना पाठ म जी,  
 एहवो अछे रं मीठाश ।  
 सरम अनुभव रम उपन जी,  
 मम्पज पुण्य नी राग ॥ आ० ॥ ५ ॥  
 त्रिपय लम्पट नर ज हुवे जी,  
 निरत्रिपयी सुण्या धाय ।  
 जिम महात्रिप त्रिपधर तणो जी,  
 नाग मन्त्र मुण्या जाय ॥ आ० ॥ ६ ॥  
 अमृत पचन मृत वरपती जी,  
 मरस्वती करो रं पसाय ।  
 जिम विनयचन्द्र इण सूत्रना जी,  
 तुरत लहे अभिप्राय ॥ आ० ॥ ७ ॥

✽ अनुत्तरोपपातिरुद्र-शा-सूत्र-सङ्काय ✽

( राग - नणदल विदली ले )

नवमो अग अणुत्तरोवार्ड, एहनी रुचि मुक्कने आई हो  
 श्रावक सूत्र सुणो ॥ टेर ॥

सूत्र सुणो हित आणी,

ए तो बीतरागनी वाणी हो ॥ आ० ॥ १ ॥

तमु कन्पावतमिका नामे

सोहे उपाग प्रकामे हो ॥ आ० ॥

एतो आगम ने अनुकूला,  
 मानु मेरुगित्तर नी चूला हो ॥ श्रा०॥२॥  
 एतो सूत्र नी नाम सुणीजे,  
 तिम तिम अन्तरगति भीजे हो ॥ श्रा०॥  
 प्रकटे नरल सनेहा,  
 एह बी उलसे मोरी देहा हा ॥ श्रा०॥३॥  
 अनुत्तम सुरपद पाया,  
 तेहना गुण इण में गाया हो ॥ श्रा०॥  
 नगरादिक मात्र बखाएया  
 ते तो छट्टे असे प्राएया हो ॥ श्रा०॥४॥  
 इहा एक सुयसन्ध वारू,  
 तण वर्ग बलि मनोहारू हो ॥ श्रा०॥  
 उद्देशा तण सचूरा,  
 सरयात सहस्र पद पूरा हो ॥ श्रा०॥५॥  
 सूत्र मुपाऊँ अमे तेहन,  
 र्पाची श्रद्धा हुवे जेहने हो ॥ श्रा० ॥  
 आताथी प्रीत लगाऊँ,  
 निन्दक न मुख न लगाऊँ दो ॥ श्रा०॥६॥  
 जह मुणता करे बक्रोर,  
 ते तो माणम नहा पिण्ण उेर हा ॥ श्रा०॥  
 कनि विनयचन्द्र कहे साँचो,  
 श्रुतरुहे सहु को राचो हा ॥ श्रा०॥७॥

## ❀ प्रश्न व्याकरण सूत्र सज्जाय ❀

( राग—आ ग आम पधागे पून० )

आओ आओ गुणना जाण, तमने सूत्र सुणाउँ ॥ देग ॥  
 दशमा अङ्ग सुङ्ग सुहाये, प्रश्न व्याकरण नामे ।  
 अत्र कल्पतरु सखे ते तो, चिदानन्द फल पाये ॥आ०॥१॥  
 पुष्पकली ज्यु परिमल महक गुरु पराग ने रागे ।  
 निम उपाङ्ग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जाग ॥आ०॥२॥  
 अङ्गुष्ठादिक जिहो प्रकार्या, प्रश्नात्कि अति रुडा ।  
 त छे अष्टोत्तरशत एतो, सूत्र मध्य मणि रूडा ॥आ०॥३॥  
 आत्रयद्वार पाच इहाँ आण्या पाच सवर डाग ।  
 महामत्र वाणी मा लहिये, लपि भेद मुखकारा ॥आ०॥४॥  
 मुखसन्ध एक छे दशम अगे, पणयालीम अज्जयणा ।  
 पणयालीम उदेश बलिपट, महस सरयातनी रयणा ॥आ०॥५॥  
 जे नर सूत्र सुणे नहीं जाने, कवल पोपे काया ।  
 माया माही रहे लपटाणा त नर डमहिज आया ॥आ०॥६॥  
 सूत्र माहि तो मारग टोय छे, निञ्चय नय व्यवहारा ।  
 विनयचन्द्र कहें ते आदरिये, तज मट मदन विकारा ॥आ०॥७॥

## ❀ विपाक सूत्र सज्जाय ❀

( राग—कइखाना )

सुणा र विपाक श्रुत सूत्र इग्यारमो,  
 तजो विकथा वृथा जे अनेगी,

ललित उपाङ्गजमु प्रवर पुष्पचलिका,  
 मलिका पाप आनन्द करी ॥ सुखो०॥१॥  
 अशुभ विपाक सम दष्टत फल भागवती,  
 नरक मा गरक गया नर प्राणी ।  
 मुक्त फल भागवती स्वर्ग माँ न गया,  
 ताम उक्तयता इहा आभी ॥ सुखो०॥२॥  
 दाय नृत्तगन्ध ने वीश अभ्ययन रलि,  
 वीश उक्त ज इहा जिन प्रयुज्ज ।  
 महम मरगत पट उक्त मचकुत्त जिम,  
 उहुल परिमल भ्रमर चित्त गुञ्जे ॥ सुखो०॥३॥  
 मरम चम्पकलता सुगभि महू ने रचे,  
 अन्य उपहार नी पुद्धि माटे ।  
 सत्र उपहार तह थी मरल जाणिये,  
 जेह वी पुरष सुख अचल खाट ॥ सुखो०॥४॥  
 वत्र ने मोक्ष मा वेहु फरण अछ  
 द फत ने सुक्त नामा विचारी ।  
 द फत न परिहरी सुक्त ने आरती,  
 नित वचन वागिये सुख भेभारी ॥ सुखो०॥५॥  
 मरर र मरर निन्दा निगुण मररी  
 नारकी तगी गति रुई जाय ।  
 नारकी प्रकृति तज महन मन्ताप भन  
 लाग नत मागली मरम उत्र ॥ सुखो०॥६॥

सुख ने दुःख निपाक फल दाखव्या,

अग इग्यारमे गीतरागे ।

चिर जयो वीर शामन जिहोँ सूत्र थी,

रवि विनयचन्द्र गुण ज्योति जाग ॥ सुखो०॥७॥

❀ फलश ❀

राग जगता रा )

अग इग्यारह मै गुण्या सहेलडी ए,

आज थयो गग गेल के ।

नन्ती सूत्र माहि पहनो सहेलडी ए,

भाप्यो मन निचोल र ॥१॥

आज ववामणा ॥ टेर ॥

पमरी अग इग्यारनी सहेलडी ए, मुक्त मन मण्डप वेल के ।

माँचो त हारये करी सहेलडी ए,

अनुभव रस नी रल क ॥ सहेल०॥२॥

हन धरी जे माँभले सहेलडी ए, कुण रूण कुण गाल के ।

तो तेह फल लहे फूठरा सहेलडी ए

म्यादें अति ही रसाल क ॥ म०॥३॥

हय अपार धरी हिय सहेलडी ए, अहमदानाद मभार के ।

भाम री एह अगनी सहेलडी ए,

अरया नय जयकार क ॥ स०॥४॥

मत्र सतह अगने सहेलडी ए, रपा अत नभ माँस



पञ्चमी दिन सुदि पक्ष मा सहेराही ए

पूरण अ मन आण न ॥ प्रा० ॥ ५ ॥

श्री जिन धर्म गुरि पाटवी महलही ए, श्री जि नरद सर्गस न ।

सरतर गच्छना रात्रिग महलही ए

तसु राज्ये मुजगीम न ॥ स० ॥ ६ ॥

पाठकृप निधान जी, महलही ए, ज्ञान तिलक मुपमाय न ।

विनयदन्द्र कहे म करी महलही ए,

अग इयारे मज्जाय न ॥ स० ॥ ७ ॥

॥ इति श्री एकादशाद सभाय ॥

## ज्ञान पद चैत्यवन्दन स्तवनादि

### चैत्यवन्दन—१

( हरिगीतिका छन्द )

ज्योति स्वरूप अनूप भव गुण भूप शिव सुखदायकम्,  
हृदयान्धकार विकार वारण पुण्य-कारण नायकम् ।

मति आदि पचप्रकार भय परपच दूर निवारक,  
ज्ञान सदा वन्दे विनययुत, नयप्रमाण सुधारकम् ॥१॥

गुरुदेव दिव्य दया प्रधान प्रसाद से जो होत है,  
सब लोक और अलोक में जिसका महा उद्योत है ।

जा एक और अनेक रूप विनेक वर विस्तारक,  
सदा वन्दे विनययुत नयप्रमाण सुधारकम् ॥२॥

मुक्तागार भगवान्पदमी परम पावन लायक  
 शुभ पंचमी व्रत साधना में शुद्ध बुद्धि विधायकम् ।  
 नत हरि कवीन्द्र मुनीर्तित अति भीम भय भयहारक  
 ज्ञान मन्त्र वन्दे विनययुत नय प्रमाण सुधारकम् ॥३॥

### चैत्यवन्दन—२

त्रिगंडे बैठा गीर जिन, भाये भविष्य आगे ।  
 त्रिभुवन सु त्रिदुलोक जन, निमुणो मन रागे ॥  
 आगधो भली भोति सु पाचम अजुवाली ।  
 ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिरि निहाली ॥  
 ज्ञान विना पशु मारिसा, जाणो इण ससार ।  
 ज्ञान आगधन थी लक्षु शिखर सुय श्रीकार ॥४॥  
 ज्ञान रहित त्रिया कही, काम वृमुम उपमान ।  
 लोका लोक प्रकाश कर, ज्ञान एक प्रधान ॥  
 चानी श्वासीच्छ्राम में, करे कर्म नो रोह ।  
 पूरं सोडी ररपा लगे, यज्ञाने करे तेह ॥  
 दश आराधन त्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ।  
 ज्ञान तणो महिमा भएयो अग पाँचमें भगवान ॥५॥  
 पचमाम लक्षु पचमी, जायजीय उत्कृष्टी ।  
 पच वरप पाच मामनी पचमी करा शुभ दृष्टि ॥  
 गकायन बलि पचना, काउमग्ग लोगम्स देरा ।  
 उजमणो करौ भावसु, टालो भव करा ॥

इरा पर पंचमी आराधिय, आणी भाव अपार ।

वरदत्त गुण मजगी पर, रग प्रिय लहो मार ॥३॥

## ❀ श्री ज्ञान पंचमी स्तुति ❀

( शारूल धर्म दित वृत्तम् )

पञ्चानन्तर-सुप्रपञ्च परमानन्द-प्रदान-क्षम

पञ्चानुत्तरीमदिव्यपदयी वक्ष्याय मन्त्रात्तमम् ।

यन प्राज्ज्वल-पञ्चमी-व्रतपो व्याहारि तत्कारिणा,

श्री पञ्चाननलाञ्छन मतनुता श्रीवर्द्धमान श्रियम् ॥१॥

य पञ्चाश्ररगोत्र-साधनपरा पञ्चप्रमादीहरा

पञ्चाणुत्रत पञ्चसुत्रतप्रिधिप्रतापना-मादरा ।

त्रया पञ्चद्वीपर निर्जनयमथा प्राप्तागतिं पञ्चमा,

तऽमी मन्तु सुपञ्चमात्रतभृता तीवङ्करा शङ्करा ॥२॥

पञ्चाशर-गुभीण पञ्चमगणाधीशन मसूत्रि,

पञ्चज्ञान विचार मार कलिः पञ्चेषु-पञ्चत्वम् ।

तीषाम गुरु पञ्चमागतिमिग्व्यसादशी-रोहिणी—

पञ्चम्यात्फिल-प्रभाशुनपट्ट ध्यायामि जैनागमम् ॥३॥

पञ्चाना परमष्टिना स्थिरतया श्री पञ्चमक श्रिया,

मक्ताना भविना गृहेषु इदृशो या पञ्चदिव्य व्यधान् ।

प्रह्ले पञ्चजने मनोमत-कृतां स्वारत्न पञ्चालिका,

पञ्चम्यात्तितपोरता भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥४॥

२

पञ्च अनन्त महन्त गुणारर पञ्चमी गतिदातार,  
 उत्तम पञ्चमी तप विधि ढायक ज्ञायक भाप अपार ।  
 श्रीपञ्चानन लाञ्छन लाञ्छित वाञ्छित दान मुदत्त,  
 श्री पद्मान जिनन्द सुमन्दो आनन्दो भवि पच ॥१॥  
 पूरण पञ्च महासरोप्रक प्रोधर भव्य उदार,  
 पञ्च अणुप्रत पञ्च महाप्रत विधि विस्तारक सार ।  
 ज पञ्चेन्द्रिय ढमि शिव पढोता त सधला जिनराय,  
 पञ्चमी तप धर भप्रियण उपर सुथिर करो सुपमाय ॥२॥  
 पञ्चाचार सुरन्वर युगतर पञ्चम गणधर वाण,  
 पञ्चज्ञान विचार विराजित भाजित मड पञ्चमण ।  
 पञ्चमकाल तिमिर भर माहे ढीपक मम मोहन्त,  
 पचमी तप फल मूल प्रकाशक ध्यावो जिन सिद्धान्त ॥३॥  
 पच परम पुत्पोत्तम मेजा कारक जो नरनार,  
 गलि निमल पचमी तपधारक तेह भणी सुविचार ।  
 श्री सिद्धायिमादेनी अहोनिशि आपो सुख अमन्द,  
 श्री जिनलाम श्रीन्द पसाय कहे जिनचन्द मृषिन्द ॥ ४ ॥

स्तवन

( राग-सजनी )

मरुल मनोरथ पूरने, पचम सुमति जिनन्द । हे मजनी ।

पाय " " जिनपर तणा,

३ धमि परमानन्द । हे सजनी ॥

ज्ञान बड़ो ममार में, ज्ञाने गिरगुर होय ह ॥ मजनी ॥  
इह भर पर भर पग्गडो,

ज्ञान तणो उपरार हे । मजनी ॥ ० ॥

उज्ज्वलज्ञान पञ्चमी तणी, विधि करानी नेह ह । मजनी ।  
विधि पर विधि जोइने,

कहिम्पूँ सधली नेह ह ॥ स० ॥ ३ ॥

पच प्रमादकरो करी, कीवी जर्म नी कोड हे मजनी ।  
कण में ग्वपारं तान थी,

दुण ररे ज्ञान नी होड हे ॥ स० ॥ ४ ॥

पहिला मतिज्ञान जाणिये, तास अड्डाईम भेद हे ॥ मजनी ॥  
चरदह भेद श्रु तज्ञानना,

अग्रधि तणा छह भेद हे ॥ सचरी ॥ ५ ॥

भेद दोय मन नाण ना, फल केवल एक हे । मजनी ॥  
जाणे पञ्चम नाण थी

लोहा लोक विरक हे ॥ स० ॥ ६ ॥

भर भर भमतों जीवड़ नाण विराध्यो होय हे ॥ स० ॥  
पञ्चमी तप प्रमाद सुँ,

कर्म छपारे सोय हे ॥ म० ॥ ७ ॥

पचमी तप करवा तणी, विधि कही शास्त्र मभार हे । म० ।  
पाच वरप ने ऊपर,

मास पाँच अग्रधार हे ॥ म० ॥ ८ ॥

दुर्जा विधि जायजीव नी करं माम उपवाम हे ॥ म० ॥

तीर्ती तिथि ष ज्ञाणजो

पमणी श्रुत अनुमार हे ॥ म ॥ ६ ॥

काती मुदि पचमो मदा, वय एक उपराम ह ॥ म ॥

भावजीव करजां सही

आणी अधिक उल्लास हे ॥ म० ॥ १० ॥

चार्थी तिथि पच मासनी लघु पचमी हाय हे ॥ म० ॥

इम कर उपराम से,

मगति अपनी जोय हे ॥ स० ॥ ११ ॥

एकामना सुं कीजिये, नीरी सुं निम्हार हे ॥ म० ॥

आँपिल सु आगधिये,

पञ्चमी ष मुखकार हे ॥ स० ॥ १२ ॥

तप करि ऊनमणो कर, शक्ति तयो अनुमार हे ॥ म० ॥

शक्ति बिना दुगुणो कद्यो,

करजो तप निरघार हे ॥ म० ॥ १३ ॥

शुभ तिथि शुभवार लीजिये, उज्ज्वल पच अति मार हे ॥ म० ॥

चंद्र पौष मल टालिये,

घ्नत अरथ मनुहार हे ॥ म० ॥ १४ ॥

मिगमर माघ फागुण भलो, जठ आपाह वैशाख हे ॥ म० ॥

इण पद्द मामे लीजिये,

ई शास्त्र नी साख हे ॥ स० ॥ १५ ॥

## ❀ पंचमो लघु-स्तवन ❀

पंचमो तप तुम रग र प्राणी,  
 निगल पापों नाश र ।  
 पत्नी तान ने पद्र गिरिया  
 नहीं कोई ता नमान र ॥ ५० ॥ १ ॥  
 नयी मंत्र में ज्ञान प्रकाशो  
 ज्ञान ना पच प्रसार र ।  
 मति श्रुत अधि धन मनपय,  
 सबल ज्ञान तीरार र ॥ ५० ॥ २ ॥  
 मति अद्वैतीय श्रुत चण्डह वीज,  
 अत्रि अ असक्य प्रसार र ।  
 दोय भट मनपर्यय दारयो,  
 कवल एर प्रसार र ॥ ५० ॥ ३ ॥  
 चन्द्र मूर्य ग्रह नक्षत्र तारा,  
 तेहमु तंज आकाश रे ।  
 कवल ज्ञान ममो नहीं कोई,  
 लालालोक प्रकाश रे ॥ ५० ॥ ४ ॥  
 पारमना र प्रभाट करिने,  
 म्हारी पूरो उम्मेर र ।  
 'ममय सुन्दर' रहे हूँ पिण पाप,  
 ज्ञान ना पचमो भट र ॥ ५० ॥ ५ ॥

## ❀ श्रुत-स्तवन ❀

( राग मुग्धो चन्दाजा )

श्रुत अति ही मलो, मुघ मरुल आधार  
नमू त्रिभुवन तिलो ॥ टे० ॥

थरये श्री गीर जिनन्द आग्यो, मृत्रे श्रीगणधर गुरु भारुयो,  
तदभय वी ज मुनिवर राग्यो ॥ श्रुत० ॥ १ ॥

जहधी जगभाज मरुल जाणे, नय एकत मुनिजन नत्रि ताणे,  
निश्चय व्यग्रहार ते मन आणे ॥ श्रुत ॥ २ ॥

जिहाँ अग उपाग छे अति रूडा, छह छंद पयन्ना नहि कुडा,  
मूल मूर नन्दी अनुयोग चूडा ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥

तिहा नियुक्ति मृत्रे मगी, बलिभाष्य चूणि टीका चगी,  
पचम अगे कही पचाङ्गी ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥

जिहा माधु आनर मारग लहिये, मवेगपदी बलि मरुटहिये,  
ए प्रण रिन भव मारग कहिये ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥

जेहनी अनुपेहा नित करिय, उपचारं दूषण परिहरिये,  
आगध्या निज अनुभव वरिये ॥ श्रुत ॥ ६ ॥

जिन आगमना जे गुण गावे शुद्धाशय जे मन माँ ध्यावे,  
न 'समाप्त्याण' मदा पावे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

## ❀ ज्ञान पद-स्तवन ❀

( राग जाखो प्रणाम )

पगम ज्ञान गुण ज्योति जग म जय जय हो

आवे शुभ गुण ज्ञान मुजन तर निर्मय हो ॥ टे० ॥



तानी मया नान उपाये, आत्म परमात्म पद पाये,  
 भय दास दूर गमाय जग में जय, जय हो ॥ परम० ॥१॥  
 ज्ञान पचमी जय जयशारी, शुद्धबुद्धि मेरे नरनारी  
 हरि करीन्द्र बलिदारी, जग में जय जय हो ॥ परम ॥२॥

### ❀ ज्ञान पद ❀

( राग—उत्तु गुम्ठी गल परदश )

हैं जग में ज्ञान महान, मरुल सुखगान हमें वह सुहाव ।  
 हम दिव्य ज्ञान को चहायें ॥ टेरे ॥  
 हित अहित ज्ञान मे ही जाने, निन तत्त्व जान कोई क्या जाने,  
 है ज्ञान की महिमा अतुल या शस्त्र बताय ॥ हम० ॥१॥  
 तप कितना ही कोई क्या न कर, नहा ज्ञान रहित वह मिद्धि बर,  
 वेद पुरान कुरान ओ जिनमत यों फरमावे ॥ हम० ॥२॥  
 निन आत्म ज्ञान नहीं प्रिया फले, निन शुद्ध ज्ञान नहीं प्रभु मिले  
 आर्था मज्जन ज्ञान भक्ति से ज्ञान को पाये ॥ हम ॥३॥

### ❀ ज्ञान का उजियाला ❀

( राग—प्रेम अपूरव माया जगत में )

ज्ञान मे हैं उजियाला जीवन में ज्ञान से ॥ टेरे ॥  
 ज्ञान विश्वगत वस्तु निखाता, ज्ञान ही हैं कर्तव्य सिखाता,  
 चलुप्रद ज्ञान की शाला जीवन में ॥१॥  
 आत्मरूप क दर्शन तब हो, ज्ञान कुञ्जी हाथ में जब हो,  
 खुल जाये मन का ताला जीवन में ॥२॥

ज्ञान में सञ्चिन काम हटावे, ज्ञान भरिप्य का रन्ध मिटार,  
 कट जाये कर्म का जाला जीवन में० ॥ ३ ॥  
 मिथी से भी ज्ञान मधुर है, श्रीगड में भी अधिक रुचिर है,  
 ज्ञान है सरस ग्वालाजीवन में० ॥ ४ ॥  
 ज्ञान ही निर्मल गङ्ग सलिल है, ज्ञान ही सुग्वकर मलयानिल है,  
 ज्ञान है अमृत प्याला जीवन म० ॥ ५ ॥  
 अनुपम आनन्द भरती मन में, ज्ञान भानु की ज्योति जीवन में,  
 फर देती है उजियाला जीवन में० ॥ ६ ॥  
 शुद्धोपयोग में ज्ञान लगावे, ज्ञान ही मोह निद्रा में जगावे,  
 मञ्जन को सुख देने वाला जीवन में० ॥ ७ ॥

### ❀ ज्ञान का महत्व ❀

( राग- प्रेम अपूर्व माया जगत म० )

ज्ञान बिना अधियारा जीवन में ज्ञान बिना० ॥ टेरे ॥  
 ज्ञान बिना नर कुठ नहीं जानें, भला घुरा कुछ नहीं पहिचान,  
 जैसे पशु बेचारा जीवन म० ॥ १ ॥  
 कृपाकृत्य को ज्ञान बताये दुष्पथ सत्पथ ज्ञान दिखावे,  
 ज्ञान में जानत मारा जीवन में० ॥ २ ॥  
 अनिघातम जब द्याया हो, समझ में जब कुछ नहीं आया हो,  
 ज्ञान दीपक ही सहाय जीवन म० ॥ ३ ॥  
 जीवन नैया भव सागर में, भटक रही हो उम अग्रसर में,  
 ज्ञान दिखाता किनारा जीवन म० ॥ ४ ॥

मन्त्र स्थाय आदि जा, मात, विद्या वह्नि ज्वाला की बुझती,

बान्ता उन जगत्प्राग जीवन म० ॥ ५ ॥

बान्ता विना चाग्नि विफल है, तान विना तप जप निष्फल है,

तान तप मन्त्र प्राग्ग जानन में० ॥ ६ ॥

एकान्त तप जा म पार, दुःख उपयोग में ज्ञान स्मरि,

'मन्त्र' जन मन 'पार' जीवन म० ॥ ७ ॥

## ❀ ज्ञान पंचमो की मञ्जाय ❀

( तज—महाभारत दुग्दाग पांडव मुद्रा० )

मविजन निम मङ्गलकारी, मरा तान मभी में मार ॥ टेरे ॥

विन बान जगत अग्निप्राग, भटकर नहीं आवत पारा,

दर दुगति हान अपारा,

कवल तान मकर मुखकार ॥ म० ॥ १ ॥

नहीं क्या ज्ञान विन होती, विन दया मुक्ति नहीं होती,

ज्ञान जगत में ज्योती,

कहते विन आगम निधार ॥ म० ॥ २ ॥

बान्ता परमणीय विनाग, तप उपशम भाव विलास

निमलतर ज्ञान प्रसाशे,

लोमलो न विलो न हार ॥ म० ॥ ३ ॥

भक्ति आदि न पंच प्रकारा एकावन भेद उदार

है एक प्रनक विचारा,

उनम स्वादुवाद अधिकार ॥ म० ॥ ४ ॥

शतगुण ज्ञान प्रदाना, गुण माग मय भगवाना,  
मनसितानन्द सजाना,

देता निरुपम पर अविहार ॥ म० ॥ ५ ॥

ज्ञानारायण नरनारी, गुण ज्ञाना क अनुमारी,  
गुण ज्ञान पचमी धारी,

रुग्ण सुप्रत विधि दिस्तार ॥ म० ॥ ६ ॥

सुरगणनायक हरि सेवा, ज्ञानोदय पार मेरा,  
गुरुमीन्द्र कहे स्वयमेरा,

जानी ज्ञान की जय जयकार ॥ म० ॥ ७ ॥

### ❀ उपापनादि-विधि ❀

अष्टाह्विता उत्तम पूर्वक उपापन कर मन्दिर में  
निम्नलिखित वस्तुएँ चढ़ावे उत्कृष्ट में चिन मन्दिर  
अथवा ज्ञान मन्दिर पृथक्कालय गणनालय विद्यालय  
आदि स्थापित कर कराने इनमें महायता देवे । वान  
भक्ति करन में ज्ञान पाने में यथाशक्ति सहायता देने  
में वान भी प्राप्ति होती है ।

**दर्शनोपकरण.—**

तेगमर, जिनरिम्ब, आगी, तिलक, मृदुट, छत्र,  
चामर, सिंहासन, भामण्डल ध्वजा आदि तथा पूजा के  
उपकरण फलज थाली रत्नी कटोरिया रण कृची अग  
लूहना धूपदानी कण चन्दन कर्पूर वराम आदि ।  
अधन्य १ उत्कृष्ट " " " " " "

## ज्ञानोपकरण —

स्थापनागत आगम ग्रन्थ पुस्तकें पृष्ठपाटी स्लट द्वात स्लम टपगी पुस्तक रखन की चौकी रीले (मापन-मापही) उत्तरग्या (स्लट पैसिल) पैसिल वामरूपा हान्डर पैन थानि । जवन / उट्ट ५ वा २५

## चारित्र्योपकरण. —

कम्यल फाँपली बहरे चोलपट्टे आमन सधारिया याथा ( रत्नाहरण ) गडी दण्डे गण्डामन पू जनी पातनपणी थानि चरपला गृहपती आमन चरपला की डार्डी थानि ।

उपरोक्त दर्शनापकरण, ज्ञानोपकरण व चारित्र्योपकरण की रस्तुणें यथा शक्ति क्रमश मन्दिर जी, वान मन्दिर व पाठशाला, माधु-माधवी व श्रावक-श्राविका में प्रिनरण करे । विशेष जानकारी क लिये गुरुजनों में पूछन उचित है, यहा पर तो सचेप स बतलाया है ।

## ॐ मर्य तपस्या ग्रहण विधि ॐ

शुभ दिन सुमूर्त्त में वस्त्राभूषण में सुयजित हो अक्षत श्रीरत्न यथाशक्ति-मोना-रूपा नाणो लकर परमेष्ठ ध्यान पूर्वक गुरु क पास पहुच द्वादशावर्त्त उदन क ज्ञान पूजा वासचेप से एव नाणा चगर कर । इरियाव हीया तस्म उत्तरी अक्षय बोलकर एक लोगस्म व

काउमगा करे । पार कर प्रगट लोगस्म कह । जैठ कर  
 गता घुटना व बीच हाथ रखकर मुहपत्ती पहिलेहन कर ।  
 पार वाण्या-देवे । नाद स्वामामण दे—अमुक तप  
 दण व चेठम उदाउह-कह कर चैत्यउन्दन कर—नमोत्पुण  
 अहित चैडयारण अन्नत्य एकनकार का काउमगा-पारकर  
 एक गुड कहे । नाद लोगस्म सव्वलोण अन्नत्य-एक नकार  
 काउमगा-पारदूमरी गुड । फिर पुकपार दीउड-सुअस्म  
 पारओ-अन्नत्य-एक नकार काउमगा पार तीसरी गुड ।  
 पुद्वारण बुद्वारण त्रैयाउच-अन्नत्य एक नकार काउमगा  
 तीसरी गुड कह नीचा नैठे । एमोत्पुण कहे सडा हो—  
 शानिनाथ स्वामी आराउनाग करमि का मगा-अन्नत्य  
 एक लोगस्म काउसगा करे पार कर-नमोहत् कह—  
 श्रीमते शानिनाथाय नम शानि-पिनायिने ।  
 त्रैलोभ्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चिताह्वय ॥  
 गुड कह शान्ति देवता आराधनार्थ करेमि काउमगा—  
 अन्नत्य-एक नकार काउसगा पार कर—  
 शानि शान्तिकर श्रीमान्, शान्ति दिगतु मे गुरु ।  
 शानि रेव सग तेपा, येपा शानि गृहेगृहे ॥  
 कह-श्रुत देवता क्षेत्र देवता भुवन देवता का काउमगा  
 कर २ नकार का करे अन्नत्य कह कर-य गुड्या बोल—  
 सुवर्ण-शालिनी देयाद् द्वादशागी जिनोद्भवा ।  
 श्रुत देवी सदा मय-मशेष-श्रुत-सम्पदम् ॥१॥

## ज्ञानोपकरण —

समापनाय आय आम्ब ग्रन्थ पुस्तकें पृष्ठे पाटी स्लेट द्यात रत्नम टवर्गा पुस्तक रत्न की चौकी गीले (मापडा-सापडी) उत्तरणा (स्लट-पेंसिल) पेंसिल नासकू पा हाटर पेन आदि । जग्रन्थ १ उच्छ्रष्ट ५ वा २५

## चारित्र्योपकरण —

रम्बल मॉबली बहरें चोलपट्टे आसन सधारिया घोषा ( रनोहरण ) दाडी टएड टएडामन पू जनी पातरे तपणी आदि चरवला मुहपत्ती आसन चरवला की डाडी आदि ।

उपरोक्त ज्ञानोपकरण, ज्ञानोपकरण व चारित्र्योपकरण नी रस्तुएँ यग शक्ति ब्रमश मन्दिर जी, ज्ञान मन्दिर व पाठशाला, माधु-साधनी व आयक-आयिका में प्रितरण कर । विशेष जानमारीक लिये गुरुजनों मे पूछना उचित है, यहा पर तो सक्षेप से उतलाया है ।

## ॐ मर्ष तपस्या ग्रहण विधि ॐ

शुभ दिन सुमुहूर्त मे वस्त्राभूषण से सुमज्जित हो अन्न श्रीफल यगशक्ति-सोना-रूपा नाणो लकर परमेष्ठी ज्ञान पूर्वक गुरु क पाम पहुच द्वादशावर्त्त वदन कर नान पूजा नासक्षेप से एर नाणा चढाकर करे । इरियाव-हीया तस्म उत्तरी अन्नतय बोलकर एक लोगस्त का

मग करे । पार कर प्रगट लोगम्म करे । नैर कर  
 धुनो क बीच हाथ रखर मुहपत्ती पडिनुठने करे ।  
 गार गण्णा-देवे । गड खमाममण दे—अमुक नर  
 य चेडम वडावेह-कह-कर चैत्यमन्दन कर-नमो-पुण  
 हत चेडयाण अन्नथ एकनरकार का साम्मग-शाकर  
 ड करे । वाड लागम्म म-उलोए अन्नथ-नर नर  
 समग-पार दूमरी धुई । फिर पुक्खवर दीवद-अन्न  
 थो-अन्नथ-गरु नरकार काउमग पार नामा यु  
 ण बुद्धाण-वेयाअच्च-अन्नथ एर नरकार काउम  
 गी धुई कह नीचा बैठे । समो-पुण कह गहा हो-  
 तनाथ स्वामी आराधनाथ करमि । का मुह  
 लोगम्म काउमग करे पार कर-नमोहत् इद-  
 श्रीमते शातिनाथाय नम शाति सिवादिनि ।  
 त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकटाभ्यचिनादिप ॥  
 मह शान्ति देवता आराधनार्थ करमि इ  
 थ-गरु नरकार काउसग पार कर-  
 णि शातिकर श्रीमान्, शानि दिग्भु  
 णि रेय सदा तेषा, येषा शाति पु  
 मह-श्रुत देवता चैत्र देवता भुवन  
 र नरकार का करे अन्नथ  
 सुवण-जालिनी देयाइ डा  
 श्रुत दवी मदा मग-मगप-  
 ॥१॥



यामा क्षेत्र गता मन्त्रि-मात्रयः श्रावणाय ।  
 जिनाना साधयन्तस्ना-भक्तु क्षेत्र-देवता ॥२॥  
 चतुर्वर्णाय मन्त्राय-श्री भवनवासिनी ।  
 निहत्य दरिता यथा-शक्तु मुखमलयम् ॥३॥

बाद शामन देवता श्रावणनाभ करमि श्रावणम् । श्रद्धा  
 नरकार—

यापाति शामन चैन सद्य प्रवृद्ध नाशिनी ।  
 माभिप्रत समृद्धयर्थ भूयाच्छामन-देवता ।  
 यह गृह गृह ममस्म रियावृत्तयः श्रावणार्थ करेमि  
 काउसग्ग-पद नरकार—

श्री शक प्रमुखा यथा । जिनशामन भंस्थिता ।  
 दयाव्यस्तदन्येऽपि रुध रन्त्रपायत ।

यह गृह गृह नीचा चैते-नमोत्पुण जावति, जावत नमोर्द्ध  
 उवम्मगाहर-जयवीरराय तक्र चैत्यपन्दन करे । खमाममण  
 देवे-इच्छा करेण भदिमह भगवन् अमुक तप गहणत्थ  
 करेमि काउसग्ग एक लोगस्म वा काउसग्ग प्रकट लोगम्म  
 रहे । तीन नरकार गिन यमाममण दे इच्छाकारण  
 मदिसह भगवन्- अमुक तप गहण दडक उच्चरावोजी  
 गुरु कहे उच्चरावेमो—

अह ए भते तुम्हाण मभीरे अमुक तव उवम  
 पजित्ताण पिहरामि राजहा दव्यथो पित्तथो कालथो  
 भावथो दव्यथो ए अमुक तव । पित्तथो ण इत्थवा

अन्यथा । कालञ्चो ए, जात्र परिमाण । भावञ्चो ए  
 जात्र गहेण न गदिज्जामि छलण न छलिज्जामि मन्त्रिणाएण  
 न मविज्जामि जात्र अण्णेषु ऋण्ड रोगायसाड परिणाम  
 वमण एमो मे परिणामो न पडिपज्जड ताव म एम तपो  
 अन्नत्थ रायाभियोगेण गणाभियोगेण बलाभियोगेण  
 देवाभियोगेण गुरुनिगहेण विचीरताएण अन्नत्थणाभोगेण  
 महत्सागाएण महत्तरागाएण मत्र ममाडिपत्तियागाएण  
 रामिरामि ।

जो तप करे उसका नाम-ममय निर्धारित कर तीन  
 बार बोले । गुरु-अर्धेण मुत्तेण, अन्थेण तदभयेण,  
 मम्म धारणिण चिण पालणिण गुरु गुणेहो षड्वाडि ।  
 नित्यागग पागो होहि ।

बाद स्वमाममण ढ गुरु मुख से पचवसाण करे ।

### ॐ सर्व तप-पारण-विधि ॐ

ज्ञान पूजा करे । इरियापही पडिक्कमे । अमुक  
 तप पाग्वा मुहपत्ती पडिलेहूँ ? रह पडिलेहे । २ वादना  
 देवे इच्छासागण सा० भगवन-तुम्मे अम्ह अमुक तप  
 पारणेह गुरु पारणेमो । ममाममण दे । इच्छा० म०  
 म० अमुकतप निक्खेवणत्थ साउमगग करानेह । मरु  
 । ऊपर की विधि मे देव उन्दन करे  
 करेमि साउमगग अन्नथ एक

काउमर्या स्तुति-नमो-धरा-ग्रामामण-भगवन्-अमुक तप  
 कृत अत्रिधि आमातना दोष लगा हो तो मन बचन  
 राया ये करी मि-ठामि दुःखद । ज्ञान भक्ति द्रव्य मे  
 भाव स का हो सा फलदायक हो जाँ । गुरु-निधार  
 पारगा हाउ । पीठ पञ्चदशगण कर । अमुक तप  
 श्यालोयणा निमित्त ऋषि माउस्मग्ग अन्नत्थ-४ लोगस्म  
 रा मास्मग्ग । प्रकट लोगस्म पीठे माधुकी साधमी की  
 भक्ति करे । उजमणा कर । नान-दशन चारित्र की वृद्धि  
 करे । इत्यन् विस्तरेण ।

इति यन्तरगा-द्वय-आया-शिरोमणि-प्रवृत्तिना

श्रीनरै नानश्रीजा महाराज शिवा सज्जनश्री

मण्डीता ज्ञान पंचमी

मुच्यते त्रिधि समाप्ता





काउभ्रमग म्भुति-नमोत्पुण-रमाममण-भगवन् अमुक तप  
 करते अत्रिधि यामातना दोष लगा हो तो मन उचन  
 काया ये करी मिच्छामि दुक्कड । ज्ञान भक्ति द्रव्य से  
 भाव से जी हो सो फलदायक हो जो । गुरु-नित्यार  
 पारणा होउ । पीउ पचकसाण करे । अमुक तप  
 आलोपणा निमित्त रुग्मि काउभ्रमग-अन्नत्थ-४ लाग्म  
 का काउभ्रमग । प्रकट लोमस्स पीछे माधुकी साधर्मी की  
 भक्ति करे । उजमणा कर । वान-गणन चारित्र की धृदि  
 करे । इत्यल विध्मेण ।

इति स्र तरग-दाय आया शिरोमणि प्रवर्तेन।

भीवतं ज्ञानश्रीजा मन्तराज शिष्या सज्जनश्री

महतीना ज्ञान पंचमी

सुप्रत विधि समाप्त



